Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सरदार वल्लभभाई पटेल और उनकी जेल यात्राएँ

भावना पाटीदार*

* शोधार्थी (इतिहास) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – सरदार पटेल का जीवन हमारे राष्ट्रीय संग्राम का जीवित इतिहास है। वही दुसरी और युवा पीढी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। लोह पुरूष बहुप्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। बिखरे हुए मोती की तरह भारत देश के बिखराव को आपस में समेटकर एक सुत्र में पिरोने का कार्य सरदार पटेल ने किया है। ऐसे व्यक्ति के जीवन की सफलता में आई उन कठीनाईयो पर मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना – भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के अठारह वर्ष बाद 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के खेडा जिले के नाडियाड में अहमदाबाद से लगभग 40 मील दक्षिण–पुर्व में एक बालक का जन्म हुआ। जिनका नाम वल्लभाई पटेल था।इनके ननिहाल में इनका जन्म हुआ। इनका पेतृक गाँव करमसद गुजरात के खेडा जिले की बोरसद तहसील में था। इनके पिता झवेरभाई गलाभाई पटेल तथा माता लाडबाई।वल्लभभाई पटेल अपने पिता के चोथे बेटे थे। इनके पिता आनंद से लगभग 5 मील दूर एक छोटे से गाँव करमसद के जमींदार थे।

वल्लभभाई के पिता ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया था। इस संबंध में महादेव देसाई ने वीरवल्लभभाई नामक पुस्तक में लिखा है– मल्हारराव होल्कर ने उन्हे कैद कर लिया था। कैद करके उन्हे अपने सामने बंधा हुआ रखकर एक बार मल्हारराव शतरंज खेल रहे थे जिस शतरंज में राजा गलत चाल चलते तब झवेर भाई कहते–'राजा, इस मोहरे को यूँ चलिए'। मल्हारराव चकित हो गए और केदी को छोडकर मित्र बना लिया। [1]

वल्लभभाई के चार भाई सेमाभाई नरसिंहभाई विठ्ठलभाई काशीभाई और एक बहन डालीबेन थी। गुजरात में हर पुरुष के आगे भाई व महिला के नाम में बेन अथवा बहन शब्द जोडकर आदर प्रदान किया जाता है।[2]

वल्लभभाई की स्कुल शिक्षा नाडियाद में हुई उनकी अन्याय के खिलाफ स्कुल में पहली हडताल थी। उनका बचपन घर के कामकाज में अधिक बिता उन्होने जीवन में जो भी काम हाथ में लिया उसे अंत तक पुरा पुरा निभाया।[3]

1910 ई में वल्लभभाई पटेल बेरीस्टरी पढने विलायत रवाना हुए। 1913 ई बेरीस्टर बनकर अपने ग्रह निवास लोटें अहमदाबाद से ही उन्होने अपनी वकालत शुरु की। शीघ्र ही वे अहमदाबाद के नामी बेरीस्टरो में गीने जाने लगे।[4]

वल्लभभाई का विवाह 1893 में झंवेर बा के साथ हुआ था विवाह के समय इनकी आयु 18 वर्ष थी। 1903 ई में उन्हे एक बेटी हुई जिनका नाम मणिबेन रखा गया। 1905 में उन्हे पुत्र हुआ जिसका नाम दह्याभाई रखा गया।

इन्ही दिनो गोधरा में प्लेग फेल गया जिसमे इनकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है। पत्नी की मृत्यु के बाद आपने दुसरी शादी नही की। [5]

महात्मा गांधी की मृत्यु के पश्चात वल्लभभाई पटेल कमजोर होते चले गए। उनकी चिंताओ में वृद्धि के चलते उनका स्वास्थ खराब होता रहा। 12 दिसम्बर 1950 ई को सरदार पटेल ने दिल्ली को अलविदा कहा और बाम्बे लोट गए। शुक्रवार का दिल का दोरा उनके लिए घातक सिद्ध हुआं। 15 दिसम्बर 1950 को सरदार वल्लभभाई पटेल ने इस दुनिया से विदा ली।[6]

जेल यात्राए– स्वतंत्रता सेनिको तथा सत्याग्रहियो के लिए जेल जाना एक आम बात थी। उस समय जेल यात्रा को ससुराल यात्रा कहा करते थे। कुछ लोगो का यह भी कहना था कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म जेल में हुआ था अत: आजादी भी जेल में ही जन्म लेगी।

वल्लभभाई पटेल प्राय: कहा करते थे कि मेरी हाथ की रेखाओ में जेल जाना नही लिखा है। लेकिन जब गांधीजी ने जब नमक सत्याग्रह का आहवान किया तो उस लडाई का आरंभ सरदार की गिरफ्तारी से हुआ। गांधीजी ने नमक सत्याग्रह के लिए वारडोली तहसील के दांडी नामक समुद्र तट को चुना। सरदार ने तुरंत अपने प्रांत में आंदोलन की तेयारी शुरु कर दी। वे गॉव गॉव घुमकर किसानो को आंदोलन का महत्व समझाने लगे। इसी सिलसिले में 07 मार्च 1930 को सरदार गुजरात के एक गॉव रास में पहुचे वहा उन्हे सभा में व्याख्यान देना था लेकिन उस इलाके के कलेक्टर ने सरदार को नोटिस भेजा की आप भाषण नही देंगे। सरदार ने कलेक्टर के नोटिस को नजरंदाज कर भाषण दिया। फलत: सरदार पटेल को गिरफ्तार कर लिया गया इनकी यह पहली गिरफ्तार थी। बापु ने दांडी के लिए अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से 12 मार्च 1930 को कुच किया उसके पाँच दिन पहले ही सरकार ने सरदार पटेल को तीन महीने की कैद के साथ ही 500 रु के जुर्माने की सजा सुनाई। वे जब साबरमती जेल जा रहे थे तब रास्ते में गांधीजी तथा अन्य आश्रमवासीयो से मिले थे। गांधीजी ने सरदार की जेल यात्रा के बारे में हिंदी नवजीवन में टिप्पणी लिखी जिसने गुजरातवासीयो को उनकी राह पर चलने के लिए ओर भी प्रोत्साहित किया। जब पटेल को बोरसाद से साबरमती जेल लाए तो रात के 8 बजे पहुचे थे। यही पर उन्होने अपनी आत्मकथा डायरी में लिखना शुरु किया। पटेल अपनी डायरी में लिखते है कि साबरमती जाते समय पुलिस अधिक्षक भी

उनके जेल जाने से दुखी थे उन्होने पटेल का रास्ते में बहुत ख्याल रखा। जेल में सरदार को बडा कष्ट उठाना पडा इन कष्टो की वजह से उनका वजन कम हो गया था। सरदार कहा करते थे कि –

शुर संग्राम को देख भागे नही,
भागे सो शुर नही।

सरदार भी अपनी तकलीफो से भागे नही साबरमती जेल में सरदार पटेल पोने चार माह रहे तथा 26 जुन को रिहा हुए। बाहर निकलने के बाद भी उन्होने अपना कार्य जारी रखा।

दुसरी गिरफ्तारी– सरदार पटेल जब जेल से छुटे तो उन्होने देखा की हिन्दुस्तान में सत्याग्रह जोरो से चल रहा है। जिसमे स्त्री पुरूष ओर छोटे छोटे बच्चे भी वीरता पुर्वक आंदोलन में भाग ले रहे है ओर पुलिस की लाठीयो का सामना हसते हसते कर रहे है।

धरसाणा ओर वडाला में भी मोर्चे लगे हुए थे इन स्थानो पर नमक बनाने के लिए बडी संख्या में सत्याग्रही जाते थे। ये सारे आंदोलन पं मोतीलाल नेहरू के सेनापतित्व में चल रहे थे कुछ दिनो बाद पं मोतीलाल नेहरू को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। नेहरू जी ने गिरफ्तार होते ही सरदार पटेल को नेतृत्व देने की घोषणा कर दी अब सरदार पर पुरे हिन्दुस्तान के आंदोलन का बोझ था। सरदार आंदोलन के संचालन के लिए बाम्बे पहुचे उन दिनो बम्बई आंदोलन का मुख्य केन्द्र बना हुआ था।

1 अगस्त को लोकमान्य तिलक की बरसी का दिन था देश भर में यह दिन बडी शान से मनाया लाता है। बम्बई में उस दिन बहुत बडा जुलुस निकाला गया इस जुलुस में सरदार पटेल, मालवीय जी, डॉ. हार्डिकर ओर उस प्रांत के मुस्लिम नेता भी शामिल हुए। सरकार ने इस जुलुस को विक्टोरीया टर्मिनस के आगे रोक दिया। जुलुस को वंही बंद करने को कहा तथा चारो तरफ से हथियारबन्द पुलिस का घेरा डाल दिया आंदोलनकारी वही बेठ गए शाम 4 से सुबह के 8 बजे तक वंही बेठे रहे। अन्त में सरकार ने जुलुस में शामिल सभी नेताओ को गिरफ्तार कर लिया ओर जुलुस में शामिल जनता पर बुरी तरह लाठीया बरसाई।

सरदार पटेल ओर अन्य नेताओ को गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया गया। जिसमे 100 – 100 रूपये का जुर्माना ओर तीन महिने की सजा सुनाई गई। मालविय जी का जुर्माना किसी अन्य व्यक्ति ने दे दिया जिससे उन्हे रिहा कर दिया गया लेकिन सरदार पटेल ने जुर्माना भरने से मना कर दिया इस पर सरदार को फिर से जेल भेज दिया गया। पटेल जेल में भी साथीयो में उत्साह भरते थे।

कुछ दिनो बाद यानी 1931 ई के आरंभ में गांधी इरविन समझोता हुआ ओर सरकार ने कांग्रेस के आंदोलन में जेल में गए सभी राजनेतिक बंदियो को छोडना पडा। इसी समझोते के तहत सरदार पटेल भी रिहा हुए। उस वर्ष कराची में कांग्रेस का सालाना सम्मेलन हुआ जिसका अध्यक्ष सरदार पटेल को चुना गया।

1930 से जो जेल जाने का सिलसिला शुरू हुआ वह अनवरत चलता रहा। पहली जेल यात्रा 7 मार्च 1930 को हुई ओर वे 26 जुन 1930 को रिहा हुए। उसके बाद उसी साल 31 जुलाई को वे पुन: नजरबंद हुए ओर यरवदा जेल भेज दिए गए। 1932 – 33 में वे पुन: सोलह महिनो के लिए जेल में रहे। इसी बीच गांधी जी भी वही थे। इस जेल यात्रा के दोरान दोनो में गाढी मेत्री हुई तथा एक दुसरे को नजदिक से समझने का मोका मिला। इसी बीच सरदार की माता जी का देहावसान हो गया ओर वे उनके अंतिम दर्शन भी नहीं कर सके।

1934 में सरदार पटेल जेल से बाहर आए ओर तीन चार वर्षो तक बाहर रहकर कांग्रेस को मजबुत बनाने व बिटिश शासन को उखाड फेकने का कार्य सुचारू ठंग से किया। 1940 व 41 में वे पुन: जेल में बंद कर दिए गए। जब वे छुटकर बाहर आए तो गांधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस ने अंग्रेजो भारत छोडो का प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव को 8 अगस्त 1942 को पं जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस महासमिति के सामने पेश किया जिसका ओजस्वी रूप से समर्थन सरदार पटेल ने किया 9 अगस्त 1942 को सरदार पटेल व अन्य नेताओ को गिरफ्तार कर लिया गया। सरदार पटेल गांधीजी के साथ अहमदनगर के किले में नजरबंद थे। इसी दौरान पटेल को उनके पुराने रोग ने जकड लिया तत्पश्चात 1945 में उनकी रिहाई हुई। सरदार नटेल की जेल यात्रा का समय यही समाप्त हुआ।

उपसंहार – राष्ट्रीय हित सरदार पटेल के लिए सदैव सर्वोपरी रहा। पद या सत्ता का लोभ उनको तनीक भी अपने लक्ष्य से विचलित नही कर सका। उन्होने समर्पित, साहसी, सत्याग्रही के रूप में राजनिति में प्रवेश किया तथा एक सक्षम संगठनकर्ता एवं कुशल प्रशासक के रूप में राष्ट्र को एकजुटता प्रदान की।

देश के महान पुरूष जिन्होने कठिन समय में भी साहस नही खोया ओर अनवरत देश की स्वतंत्रता में अपना योगदान दिया। ब्रिटिश सरकार की कष्टकारी यातनाओ के बावजुद कभी अपने कदमो को पिदे नहीं हटाया। ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी पटेल जी के जीवन को आत्मसात कर हम अपने जीवन को सही मार्ग प्रदान कर सकते है।

राष्टवादी, व्यवहारकुशल राजनेता सरदार वल्लभ भाई पटेल का व्यक्तित्व व कृतित्व देशवासियो के लिए सर्वदा ज्योति स्तंभ बने रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सुची :–

1. Balray Krishna :- Sardar vallabh bhai patel India's Ironmen
2. शंकर दयाल सिंह :– लोहपुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल
3. Saggi P. D. :- Life and work of Sardar Vallabhbhai Patel
4. Patel I. J. :- Sardar Vallabhbhai patel
5. कुमार प्रयंक :– सरदार वल्लभभाई पटेल 2002
6. शंकर दयाल सिंह :– लोहपुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल
7. बंसल श्री रतनलाल :– सरदार वल्लभभाई पटेल पएक जीवनीब
8. रिजवी आबिद :– सरदार वल्लभभाई पटेल लोहपुरूष के जीवन का प्रेरणदायक दस्तावेज
9. गुप्ता डॉ. मोहनलाल :– सरदार वल्लभभाई पटेल पप्रेरक रोचक प्रसंगब

****